बौद्धिक संपदा अधिकारों पर चर्चा

रैंपन भट्टाचार्य

लचीले अधिकार जो सभी को समृद्ध बनाएं

डॉमिनिक कीटिंग

बौद्धिक संपदा अधिकारों का ऐसा संकलन है, जिसमें नए उत्पादों, प्रक्रियाओं, सृजनात्मक कार्यों और सेवाओं को बढ़ावा देने की व्यवस्था है, ताकि सभी इससे धन कमा सकें।

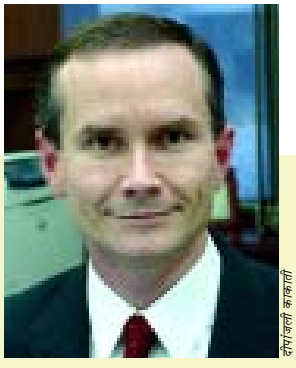

दीपा जलीं कक्कार्ती

इस वर्ष अक्टूबर में डॉमिनिक कीटिंग भारत में तैनात किए जाने वाले पहले अमेरिकी बौद्धिक संपदा विशेषज्ञ बन गए। वह नई दिल्ली स्थित अमेरिकी दूतावास के वाणिज्य विभाग में फर्स्ट सेक्रेटरी के तौर पर बौद्धिक संपदा सुरक्षा और नियमों पर अमल और साथ ही बौद्धिक संपदा के मामलों में अमेरिका और भारत की सरकारों के बीच सहयोग का काम कर रहे हैं। वर्ष 2003 से 2006 तक वह अमेरिका के पेटेंट एंड ट्रेडमार्क ऑफिस ऑफ इंटरनेशनल रिलेशन्स में पेटेंट अटॉर्नी रहे। इस दौरान बौद्धिक संपदा और जैव विविधता, जैव संसाधन और परंपरागत ज्ञान, बौद्धिक संपदा और स्वास्थ्य से जुड़े मामले उनका कार्यक्षेत्र रहे। वर्ष 2001 से 2003 तक वह विश्व व्यापार संगठन में बौद्धिक संपदा अताशे रहे। उन्हें औषध विज्ञान, रासायनिक और जैव प्रौद्योगिकी में पेटेंट परीक्षक, कंप्यूटर और दूरसंचार से संबद्ध माल के विशेषज्ञ ट्रेडमार्क परीक्षक अटॉर्नी और शोध वैज्ञानिक के तौर पर काम करने का भी अनुभव है।

फिलिप्स® के लाइट बल्ब, नैंसी ड्रयु© की किताबें और कैंपबेल® सूप आदि उन सभी उत्पादों को इसके तहत संरक्षित किया गया है, जिन्हें हम रोज इस्तेमाल करते हैं। इस बारे में एक मॉडल बना हुआ है, जो दर्शाता है कि बौद्धिक संपदा का बाजार में वैविध्यपूर्ण ढंग से किस तरह इस्तेमाल होता है कि वह इसके स्वामियों, उपभोक्ताओं और जनता की जरूरतें पूरी कर पाती है।

बौद्धिक संपदा से प्रत्यक्ष रूप से पूंजी तब बनती है, जब कोई व्यक्ति या व्यवसाय नए आविष्कारों, सृजनात्मक कार्यों और ब्रांडों के जरिए बाजार में अपने लिए जगह बनाता है। परोक्षत: यह काम पेटेंट तब करता है, जब कोई नया आविष्कार जनता तक पहुंचता है। इस तरह बौद्धिक संपदा रूपी यह विचार और अधिक नए आविष्कारों, उत्पादों, सेवाओं और व्यवसायों की वजह बनता है। जब बौद्धिक संपदा अधिकारों की मियाद खत्म हो जाती है, तब जनता हमेशा के लिए पहले हो चुके आविष्कारों, सृजनात्मक कार्यों और ट्रेडमार्कों का लाभ उठाने और उन्हें बनाने के लिए स्वतंत्र हो जाती है। उनके ऐसे योगदान से पूंजी का बढ़ना जारी रहता है।

क्या आप इसे पढ़ना चाहेंगे? प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार ने प्रकाशकों को यह सुविधा दी कि वे किताबों की प्रतियां छाप सकें और उन्हें व्यापक स्तर पर वितरित कर सकें। इससे पहले किताबों की हस्तलिखित प्रतियां तैयार की जाती थीं और वे सिर्फ अमीरों को उपलब्ध हो पाती थीं। इसी से इंग्लैंड में पहला कॉपीराइट कानून बनाने की जरूरत पैदा हुई,

जिसने लेखकों के हित संरक्षित किए। सन् 1800 के दशक में इंग्लैंड के दबाव के चलते अमेरिका ने विदेशी और घरेलू लेखकों और सर्जकों को कॉपीराइट के तहत संरक्षण देने की शुरुआत की (www.wipo.org)। इससे देसी साहित्य फलने-फूलने लगा।

मालिकाना हक के इस सिस्टम के तहत अमेरिका में संगीत, सिनेमा, साहित्य और कला संबंधी उद्योगों का खूब विकास हुआ। इंडस्ट्री के आकलनों के मुताबिक 2002 में अमेरिकी कॉपीराइट उद्योग ने 626 अरब डॉलर से ज्यादा या फिर अमेरिका के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के छह फीसदी से ज्यादा पूंजी के निर्माण में योगदान दिया (www.iipa.com)।

कितना महत्वपूर्ण है यह काम ? पहला आधुनिक पेटेंट कानून 1474 में वेनिस में पारित किया गया था। पेटेंट हासिल करने वाले शुरुआती आविष्कर्ताओं में से एक थे गैलिलियो, जिन्हें जमीनों की सिंचाई में पानी की मात्रा बढ़ाने वाली ईजाद पर पेटेंट मिला था। आज पेटेंट अमेरिकी संविधान का एक अनिवार्य हिस्सा हैं। नए आविष्कारों को प्रोत्साहन देने के कारण पेटेंट पूरी दुनिया में नएपन की ललक की राह में मील का पत्थर बन गए।

नए आविष्कारों को कठोर पेटेंट कानूनों के तहत प्रोत्साहन मिलने के कारण बाजार में पूंजी बनने लगती है। मिसाल के तौर पर, 1980 में अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने साफ किया कि जीवित चीजों का अमेरिकी कानून के अंतर्गत पेटेंट हो सकता है। इसके बाद से अमेरिका के जैव प्रौद्योगिकी उद्योग में जबर्दस्त बढ़ोतरी हुई और बाजार में जीवनरक्षक आविष्कारों की बाढ़ सी आ गई। आज जैव प्रौद्योगिकी इंडस्ट्री में अमेरिका शीर्ष पर है और वहां 1500 से ज्यादा बायोटेक कंपनियां हैं, जिनमें काम करने वाले नौ लाख से ज्यादा लोग औसतन 60 हजार डॉलर सालाना वेतन पा रहे हैं (www.bio.org)।

क्या आप सूप लेना पसंद करेंगे ? ट्रेडमार्कों की शुरुआत उस आरंभिक समय से मानी जा सकती है, जब इंसान ने अपनी विशिष्ट पहचान छोड़नी शुरू की थी। मिसाल के तौर पर, 5000 ईसा पूर्व के गुफा चित्रों में मनुष्य अपने दोनों ओर जंगली भैंसे को प्रतीक के रूप में चित्रित करता था। साढ़े तीन हजार ईसा पूर्व की मैसोपोटामिया की चीजों की पहचान गोलाकार मुहरों की छाप से होती थी (www.lib.utexas.edu)।

आज वाणिज्य-व्यापार के हर पहलू में ट्रेडमार्क का इस्तेमाल होता है। इसके जरिए उत्पाद उपभोक्ताओं के बीच पहचान बना पाते हैं और व्यवसाय की साख बढ़ती है। सन् 1988 में जब नेस्ले ने रॉन्ट्री नामक एक ब्रिटिश चॉकलेट कंपनी खरीदी थी, तो उसने रॉन्ट्री की फैक्ट्री और स्टॉक के लिए 50 करोड़ पाउंड अदा किए थे। जबकि उसके ट्रेडमार्क

स्पैन के पाठकों को

चर्चा का निमंत्रण

कृपया बौद्धिक संपदा अधिकारों पर अपनी राय हमें **editorspan@state.gov** पर लिखकर भेजें।

इनमें से कुछ पत्र
हम अपने अगले अंक और वेबसाइट पर
प्रकाशित करेंगे।

http://usembassy.state.gov/posts/in1/wwwhspan.html

के बदले उसे दो अरब पाउंड देने पड़े थे (www.wipo.int)। बिजनेस वीक ने कोकाकोला® को 67 अरब डॉलर वाला दुनिया का सबसे कीमती ब्रांड ठहराया है। दूसरे कई उत्पाद, जैसे कि कैंपबेल® सूप, जिलेट® और कैनन® आदि ब्रांडों की भी काफी कीमत है। अगर इन कंपनियों को ट्रेडमार्क से जुड़ा संरक्षण नहीं मिला होता, तो मुमकिन था कि इनमें से कुछ उत्पाद आज के बाजार से नदारद होते।

मौजूदा बिजनेस मॉडलों में बौद्धिक संपदा अधिकारों का लचीले ढंग से प्रयोग होता है। आज के बाजारों में कायम बिजनेस मॉडल इस मामले में लचीला रुख दर्शाते हैं। बौद्धिक संपदा अधिकार रखने वाली कंपनियां अपने बिजनेस मॉडल या दर्शन के मुताबिक चाहें तो इनमें छूट दे सकती हैं या फिर इन्हें कड़ाई से लागू कर सकती हैं। उदाहरण के तौर पर बौद्धिक संपदा अधिकार की धारक कंपनियों के पास यह विकल्प है कि दूसरों को उनका कोई उत्पाद बेचने, किताब का पुनरुत्पादन करने या ट्रेडमार्क के इस्तेमाल करने या नहीं करने की छूट दे सकती हैं। दूसरी तरफ, यह भी जरूरी है कि बौद्धिक संपदा अधिकारों का सकारात्मक इस्तेमाल हो। अगर कोई ऐसा करने में असफल होता है (भले ही यह काम जानबूझकर किया गया हो या नहीं), तो इसके फलस्वरूप दूसरे लोग एक आविष्कार, सृजनात्मक कार्य अथवा ट्रेडमार्क का इस्तेमाल कर सकते हैं।

आइए, अब बाजार में बौद्धिक संपदा अधिकारों की व्यापक विविधता दर्शाने वाले चार मॉडलों का जिक्र किया जाए। पहला आईबीएम® मॉडल है, जो कंपनी की बौद्धिक संपदाओं का एक हिस्सा जनता को मुहैया कराता है। पिछले साल आईबीएम® ने घोषणा की कि वह ओपन-सोर्स प्रोजेक्टों, जैसे कि लीनिक्स® ऑपरेटिंग सिस्टम, पर काम करने वाले किसी भी व्यक्ति को अपने 500 पेटेंट मुफ्त में उपलब्ध करा सकती है। अमेरिका में सबसे ज्यादा पेटेंट आईबीएम® के ही पास हैं। इसने 2004 में 3,248 पेटेंट हासिल किए और पिछले 12 साल में इसने अपने आविष्कारों पर लाइसेंस देने के बदले कम से कम एक अरब डॉलर की कमाई की है (www.ibm.com)।

दूसरा मॉडल है कोहेन एंड बॉयर। इस मॉडल के तहत एक मुनासिब ऊंची कीमत और ठीकठाक रॉयल्टी के बदले असीमित लाइसेंस जारी किए जाते हैं। बौद्धिक संपदा अधिकार पर लाइसेंस या तो संपूर्णता में या फिर टुकड़ों में दिए जा सकते हैं। लाइसेंसिंग समझौतों से असल में इसमें शामिल पार्टियों की जरूरतों की बाबत लचीला रुख अपनाया जा सकता है। जैसे कि यह लाइसेंस विशिष्ट हो सकता है या फिर गैर-विशिष्ट, क्षेत्र या राज्यवार हो सकता है (इसका अर्थ यह है कि एक ही देश के अलग-अलग हिस्सों में रहने वाले विभिन्न लोग किसी उत्पाद का उपयोग कर सकते हैं) और रॉयल्टी के बदले खासतौर पर जारी किए जा सकते हैं।

सन् 1980 में स्टेनली कोहेन और हरबर्ट बॉयर ने डीएनए की अनुकृति करने वाले एक बेमिसाल तरीके को पेटेंट कराया। उन्होंने अपने आविष्कार का लाइसेंस 370 से ज्यादा कंपनियों को उत्पाद के प्रकार व ब्रिकी के आकार के आधार पर दिया। इस लाइसेंस के एवज में उन्होंने दस हजार डॉलर का सीधा भुगतान, इतनी ही राशि सालाना एडवांस और बिक्री के तीन फीसदी हिस्से पर 0.5 प्रतिशत के हिसाब से रॉयल्टी कमाई।

तीसरा है वारहॉल मॉडल, जो बौद्धिक संपदा अधिकारों का अपने लाभ के लिए उल्लंघन करने वाले शक्तिशाली लोगों पर लागू होता है। एंडी वारहॉल ने दूसरों के लिए काम करके खुद को एक सफल कलाकार के रूप में स्थापित किया था। जब उसने कैंपबेल® सूप जैसे मशहूर प्रतीक के आधार पर अपनी कृति बनाई, तो उसने भी दूसरों के सृजन से संबंधित बौद्धिक संपदा अधिकारों के लचीलेपन का फायदा उठाया था। सन 1987 में वारहॉल की मृत्यु हो गई, तो उसकी फाउंडेशन ने यह नीति बनाई कि वह उन लोगों पर बौद्धिक संपदा अधिकार के तहत कोई कार्रवाई नहीं करेगी, जो सिर्फ कला के लिए वारहॉल के सृजन की नकल करते हैं। लेकिन फाउंडेशन ने उन ताकतवर उल्लंघनकर्ताओं के खिलाफ बौद्धिक संपदा अधिकार कानून का उपयोग किया, जो आर्थिक लाभ पा रहे थे (www.warholfoundation.org)।

चौथा है अत्यंत प्रभावी प्रवर्तन मॉडल। तमाम कंपनियां इस मॉडल का इस्तेमाल करती हैं। कंपनियां अपने कई अथवा सभी बौद्धिक संपदा अधिकारों के बचाव के लिए यह मॉडल अपनाती हैं। यह मॉडल वाल्ट डिज्नी जैसी उन कंपनियों के लिए खास तौर पर फायदेमंद हैं, जिन्होंने शोध और विकास या सृजनात्मक कार्यों में भारी-भरकम निवेश कर रखा है या फिर जो अपने ब्रांड की पहचान को खास तवज्जो देती हैं।

बौद्धिक संपदा एक ऐसा लचीला अधिकार है, जिसका दान किया जा सकता है, जिसका लाइसेंस दिया जा सकता है और जिसे उसके मालिक, उपभोक्ता और जनता की जरूरतों के मुताबिक तमाम तरह के बिजनेस मॉडलों पर लागू किया जा सकता है। इसकी सबसे बड़ी अहमियत यह है कि यह बौद्धिक संपदा के संरक्षण के लिए तय किए जाने वाले मानकों को संरक्षित रख सकता है और उनमें बढ़ोतरी कर सकता है। बौद्धिक संपदा संरक्षण के बिना शायद कलाकारों, आविष्कर्ताओं और व्यवसायियों को कैंपबेल® सूप नहीं मिल पाता। वे महान कार्य, जैसे कि वारहॉल ने किए, शायद कायम नहीं रह पाते। *इनोवेशन एंड एंटरप्रेन्योरशिप* के लेखक पीटर ड्रकर कहते हैं, बौद्धिक संपदा संरक्षण के आधार पर, ''एक अंत:प्रेरणा उद्यमिता का विशिष्ट औजार है... एक ऐसा काम, जिसने संसाधनों को ऐसी क्षमता से लैस किया, ताकि समृद्धि आ सके।'' सभी के लिए।

© ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी./ डिज्नी हो, फाइल

हांगकांग डिज्नीलैंड पार्क में दिख रहे कार्टून चरित्र मिकी माउस और उस की साथिन मिन्नी पहले-पहल 15 मई 1928 को मूक फिल्म 'प्लेन क्रेजी' में दिखे। केन पॉल्सॅन की पुस्तक 'द क्रॉनॉलॉजी ऑफ वाल्ट डिज्नीज मिकी माउस' के अनुसार अगले ही दिन वाल्ट डिज्नी ने मिकी की छवि और चरित्र के टेड्रमार्क के लिए आवेदन कर दिया जो चार महीने बाद यू.एस. पेटेंट ऑफिस ने उन्हें दे भी दिया। मिकी और उसके कानों की आकृति भी वाल्ट डिज्नी कम्पनी के पंजीकृत टेड्रमार्क हैं जिनका उपयोग संसारभर में कंपनी के प्रकाशन, मनोरंजन और रेस्तरां कारोबार में होता है। मिकी माउस कार्टूनों और कॉमिकों का कॉपीराइट अंतत: एक दिन खत्म हो जाएगा और उनका उपयोग कोई भी कर पाएगा लेकिन अमेरिकी टेड्रमार्क कानून के तहत मिकी माउस की छवि सदा के लिए संरक्षित रह सकती है (http://www.uspto.gov/)। वाल्ट डिज्नी कम्पनी अपने टेड्रमार्क अधिकारों का डटकर बचाव करती है।